पित्त की थैली में पथरी का आपरेशन

खराब पित्त की थैली एवं उसमें पड़ी पथरी निकालने का आपरेशन अब **एकल सूक्ष्म छिद्र गैस रहित विधि (Single Hole Gasless Microlap Cholecystectomy – SHGMC)** से किया जा सकता है। इसमें पेट में सिर्फ एक छोटा सुराख किया जाता है। इसी सुराख से पेट के अन्दर यंत्र डाल कर उनके नियंत्रण में आपरेशन किया जाता है। आपरेशन के 3 से 6 घण्टे बाद अधिकतर मरीज खाने पीने और चलने लगता है और प्राय: 12 से 24 घण्टे बाद अस्पताल से छुट्टी हो जाती है।

पित्त की थैली एवं उसमें पथरी निकालने के आपरेशन निम्न प्रकार के होते हैं :.

1. बडे चीरे वाला आपरेशन – चली आ रही विधि
2. छोट, छोटे चार सुराख का आपरेशन (लैपरोस्कोपिक द्वारा)
3. एकल सूक्ष्म छिद्र गैस रहित की विधि – *Single Hole Gasless Microlap Cholecystectomy – SHGMC*

पेट के बडे आपरेशन में पित्त की थैली, पथरी और थैली से जुडी नसें हॉथ से महसूस हो जाती हैं। छोटे चार या तीन सुराख के आपरेशन में क्योंकि हाथ पेट के अन्दर नहीं जाता और TV देख कर आपरेशन होता है पेट को गैस से फुलाकर अत: गलत नस कटने या पथरी छूटने की संभावना बढ़ सकती है।

इन परेशानियों से बचने के लिये डा० सन्दीप कुमार ने एकल सूक्ष्म छिद्र गैस रहित विधि – *Single Hole Gasless Microlap Cholecystectomy – SHGMC* विकसित की है। इस आपरेशन में एक सुई लगाकर, पूरे पेट को सुन्न कर दिया जाता है जिससे कि बेहोशी के दुष्परिणाम नहीं होते है। पेट में एक छोटा चीरा लगाया जाता है और विशेष यंत्रो से पूरी पित्त की थैली सारी पथरियों सहित बाहर निकाल कर दे दी जाती है। इस पूरे आपरेशन में लगभग 40 से 60 मिनट लगते है। हेड लाईट से पेट के अन्दर बिल्कुल साफ दिखायी देता है जिससे पेट के अन्दर पित्त की नली या आंतो को नुकसान पहुचने का खतरा कम होता है। क्योंकि पूरी थैली मय पथरी सहित निकाली जाती है अत: पथरी के थैली से बाहर निकल कर पेट के अन्दर गिरने का भी डर कम रहता है। आपरेशन के बाद मरीज को 8 घंटे बाद चाय पानी दे दिया जा सकता है व अगले दिन खाना दिया जा सकता है। अधिकतर मरीजों को अस्पताल से 24 घंटे में छुटटी दे दी जाती है। दो या तीन दिन बाद मरीज लगभग सारे काम कर सकता है। खाने पीने का कोई परहेज नहीं होता है।

इस विधि से डा० सन्दीप कुमार एवं उनकी टीम द्वारा 8000 से अधिक सफल आपरेशन किये गये हैं। यह दूरबीन विधि (लैपरोस्कोपी) या बड़े चीरे वाला पुराना आपरेशन नहीं है। हलॉकि इसमें पेट में सिर्फ एक छोटा सुराख किया जाता है और वे खतरे जो सिर्फ दूरबीन के आपरेशन से होते है उनकी संभावना इस आपरेशन में बहुत कम होती है। हृदय एवं फेफडे के रोगियों का भी इस गैस रहित विधि से सफल आपरेशन सहज है।

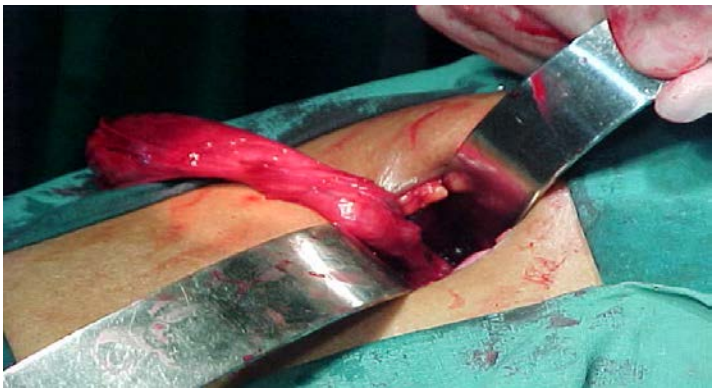

प्रो० डाक्टर संदीप कुमार MS FRCS (Edinburgh) PhD (Wales, UK) MMSc (Newcastle)
सर्जन एवं कैंसर विशेषज्ञ, लखनऊ
Clinic : B-52, J-Park, Aastha Hospice premises,
Mahanagar, Lucknow
E : profsandeepsurgeon@gmail.com
W : www.surgeoninlucknow.com
M : 0 93352 40880